International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 17-11-2019; Accepted: 18-12-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 75-76

वैश्वीकरण एवं गरीबी

Ajay Kumar
P.G. Student of Political Science, D.A.V. College Abohar, Punjab, India

सारांश
आज के युग में वैश्वीकरण का ही बोलबाला है आज के समय में वैश्वीकरण और गरीबी बहुत बड़ा मुद्दा है पहले हम वैश्वीकरण क्या है यह वैश्वीकरण से अभिप्राय है सैद्धान्तिक रूप से विभिन्न देशो की अर्थव्यवस्थाओं को एकीकृत करते हुए वस्तुओं और सेवाओं के खुले आदान–प्रदान से। दूसरा गरीबी से अभिप्राय है कौई व्यक्ति जो अपने जीवन की सामान्य जरूरतो को पूरा नही कर सकते, वह गरीब है आज का सबसे बड़ा मुद्दा है कि वैश्वीकरण से गरीबी बढ़ी है या घटी है कुछ विचारको के मत के अनुसार गरीबी में कमी हुई है कुछ के अनुसार वृद्धि हुई है देखा जाए तो हकीकत में तो गरीबी दिन–ब–दिन बढ़ रही है। वैश्वीकरण का फायदा अमीर देशों को हुआ है। गरीब देश तो वहां के वहां ही है। उनकी जनता वैसे ही भूखी मर रही है। अमीर देश वैश्वीकरण का झूठा ढोल पीटकर उनका शोषण करते है।

मूल शब्द: वैश्वीकरण, गरीबी, अमीर, अर्थव्यवस्थाओं

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के पक्ष के विचारकों का मत है कि वैश्वीकरण की बदौलत दुनिया में सभी देशों में गरीबी दूर करने में बहुत सहायता मिली है। इससे व्यापारियों के लिए मुक्त व्यापार का रास्ता खुला है जिससे व्यापारी दूसरे देश में खुला व्यापार कर सकते है इसके पक्ष के विचारकों का मत है कि वैश्वीकरण के कारण प्रति व्यक्ति को आमदन में वृद्धि हुइ है और उत्पादन में भी वृद्धि हुई है।

हर व्यक्ति को अच्छा स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिल रहा है विदेशी कंपनियो में रोजगार के अवसर मिल है।

विचारको के अनुसार गरीब देश की जनता को यह फायदे मिले है जिससे गरीबी दूर हुई है।

1. विकासशील गरीब देश अंतर्राष्ट्रीय कर्जो से बचते हुए विदेशी निवेश के जरिए पूंजी जुटा सकते है।
2. विकासशील गरीब देश अनुसंधान और विकास में निवेश किए बिना विकसित देशो से उन्नत प्रौद्योगिकी प्राप्त कर विकास कर सकते है।
3. वैश्वीकरण के जरिए से ज्ञान की तेजी से प्रसार संभव है जिससे विकासशील देश अपनी अर्थव्यवस्था में उत्पादन और उत्पादकता का स्तर अंतर्राष्ट्रीय मानको के आधार पर बढ़ा सकते है।
4. परिवहन एवं संचार लागत को कम करते हुए वैश्वीकरण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देता है। और इस कारण से संकल घरेलु उत्पाद के प्रतिशत के रूप में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में खासी वृद्धि सम्भव है।

इन तथ्यों को देखा जाए तो वैश्वीकरण के पेरोकारों का मानना है कि वैश्वीकरण विकास का इंजन है जो गरीबी को दूर करने वाला और उत्पादकता बढ़ाने वाला है।

पर इसके उल्ट वैश्वीकरण के समर्थको के दावे को विभिन्न देशों के शोधकर्ताओं ने परीक्षण किया है इसकी आलोचना की इसको एक आलोचना अर्थशास्त्र के 2001 में नोबेल विजेता ओर विश्व बैंक के प्रमुख अर्थशास्त्री जोजफ स्टीग्ल ने अपनी पुस्तक 'वैश्वीकरण और इसकी निराशा' में प्रस्तुत की ओर उसके बाद इसकी आलोचना विश्व आयोग ने की है।

विश्व आयोग के अनुसार, ''वैश्वीकरण का मौजूदा मार्ग बदलना होगा। इससे बहुत थोड़े लोगो का लाभ होता है''

विश्व आयोग का यह कथन हकीकत को ब्यान करता है। आज भी बहुत सारे देश गरीबी में जीते है एक रिपोर्ट के अनुसार देश में 77 प्रतिशत जनता अभी गरीब है जिम्बावे में 72 प्रतिशत है। इसके इलावा भी बहुत सारे ओर देश है।

वैश्वीकरण का फायदा अमीर देशो और अमीर लोगो को ही हुआ है। गरीब देश और उसकी गरीब जनता का बुरा हाल ही हुआ है। गरीब जनता के रोजगार के साधनों में कमी आई है नौकरी भी अब स्थाई नहीं रही है। श्रम सस्ता हो गया। ज्यादा काम मशीनों से होता है। बहु राष्ट्रीय कम्पनीयां अपनी मनमानी की तन्खवाह देती है।

विकासशील देशों की सरकारो को दबावी है स्वास्थ्य सेवाएं भी मंहगी हुई है। दवाई भी मंहगी हुई हैं यदि प्रति व्यक्ति आमदन भी बढ़ी है तो उसके साथ मंहगाई दोगुनी बढ़ी है। बात वहीं की वहीं ही है। फायदा केवल अमीर लोगो ओर अमीर देशो को।

अमीर देश वैश्वीकरण के मुद्दो का फायदा उठाकर गरीब देशो का शोषण कर रहे है। अमीर देशो की बहु राष्ट्रीय कम्पनीयां बहुत अरबो रूपये सलाना अमीर देशो में ले जा रही है। गरीब देशो की जिस कारण अर्थव्यवस्था सतुंलन खो गई है। व्यापार घाटे में चल रहा है। जिस कारण वहां मंहगाई चरम पर है। गरीब देशो का बुरा हाल है।

इसके इलावा अमीर देश स्वयं तो उनसे निर्यात करते है पर उन देशो की चीजें अपने बाजार में आने से किसी न किसी तरीके से रोकते है। आज आर्थिक असमानता बढ़ रही है। अमीर ओर अमीर गरीब और गरीब हो रहा है। दिन–ब–दिन गरीबी बेरोजगारी बढ़ रही है। देखा जाए तो बहुत ज्यादा नुक्सान गरीब देशो को ही उठाना पड़ रहा है। पर इसके इलावा देखा जाए तो वैश्वीकरण ने गरीबी कम करने में भी योगदान दिया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरणों से यह ज्ञात होता है जहां वैश्वीकरण से कुछ गरीबी दूर करने के उपाय किए गए है कुछ हद तक फायदेमंद भी हुआ है। पर जिन देशों में गरीबी बढ़ी है बेरोजगारी की समस्या पैदा हुई है। आर्थिक मंदी आई है। यह सब इसकी ठीक से लागू न करने और अमीर देशो के भेदभाव पूर्ण रवैये के कारण हुआ है। जब सब मिलकर प्रयास करेंगे तो गरीबी जरूर दूर होगी।

सन्दर्भ सूची

1. रमेश जोड़ा का लेख (वैश्वीकरण माड़ा माड़ा)
2. प्रवीण देशमुख का रिसर्च पेपर (21वी. सदी)
3. जागरण जोश (हेमतं सिंह) 11 अगस्त 2017
4. मुकेश कुमार यादव (वैश्वीकरण की अवधारणा)
5. सुमित रिणवा (सहायक)